

मथुरा कला का ऐतिहासिक विकास एवं प्रमुख विशेषताएँ

डॉ. शालिनी

इतिहास विभाग, संस्कृति और पुरातत्त्व, चौधरी रणबीर सिंह यूनिवर्सिटी, जींद, हरियाणा, भारत

DOI: <https://doi.org/10.66856/ijhr.2026.12.4.12246>

सारांश

भारतीय कला एवं संस्कृति के इतिहास में मथुरा कला का महत्वपूर्ण स्थान है। मथुरा प्राचीन काल से ही भारतीय धर्म, संस्कृति, व्यापार तथा मूर्तिकला का प्रमुख केंद्र रहा है। इसकी ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक परंपरा अत्यंत प्राचीन है। पौराणिक परंपराओं में मथुरा को मधु, मधुपुरी तथा मधुवन से जोड़ा गया है। आगे चलकर यह शूरसेन जनपद की प्रमुख नगरी के रूप में विकसित हुई तथा बौद्ध, जैन और ब्राह्मण धार्मिक परंपराओं का महत्वपूर्ण केंद्र बनी।

मथुरा की स्थानीय मूर्तिकला परंपरा का विकास प्रारंभिक यक्ष-यक्षिणी प्रतिमाओं से हुआ और आगे चलकर मौर्य, शुंग, कुषाण तथा गुप्त काल में इसका क्रमिक विकास हुआ। प्रारंभिक बौद्ध कला में बुद्ध को मानव रूप में प्रस्तुत करने के स्थान पर बोधिवृक्ष, धर्मचक्र, स्तूप तथा चरण-चिह्न जैसे प्रतीकों के माध्यम से उनकी उपस्थिति व्यक्त की जाती थी। कुषाण काल में मथुरा एक प्रमुख मूर्तिकला केंद्र के रूप में विकसित हुआ और बुद्ध की मानवाकार प्रतिमाओं के साथ जैन तीर्थंकरों तथा ब्राह्मण परंपरा के देवी-देवताओं की प्रतिमाओं का भी निर्माण हुआ।

मथुरा कला की प्रमुख विशेषताओं में लाल चित्तीदार बलुआ पत्थर का प्रयोग, सशक्त एवं सजीव मानव आकृतियाँ, यक्ष परंपरा का प्रभाव, भावाभिव्यक्ति, शरीर से जुड़े पतले वस्त्र, प्रभामंडल, विभिन्न मुद्राएँ, स्त्री सौंदर्य का चित्रण तथा भारतीय सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन का अंकन प्रमुख हैं। गुप्त काल में मथुरा की पूर्ववर्ती परंपराओं को अधिक सौम्य, संतुलित एवं आध्यात्मिक रूप प्राप्त हुआ। इस प्रकार मथुरा कला ने भारतीय मूर्तिकला के विकास में दीर्घकालीन योगदान दिया।

मूल शब्द: मथुरा कला, मधुपुरी, शूरसेन, मौर्य काल, शुंग काल, कुषाण काल, गुप्त काल, बुद्ध प्रतिमा, यक्ष-यक्षिणी, जैन तीर्थंकर, भारतीय मूर्तिकला।

प्रस्तावना

भारत प्राचीन समय से ही कला और संस्कृति की दृष्टि से समृद्ध देश रहा है। भारतीय कला की विभिन्न शैलियों ने देश की धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक परंपराओं को व्यक्त किया है। प्राचीन भारतीय कला के विकास में मथुरा कला का विशेष योगदान रहा है।

मथुरा प्राचीन भारत का एक प्रसिद्ध धार्मिक, सांस्कृतिक और व्यापारिक केंद्र था। इसकी भौगोलिक स्थिति तथा विभिन्न क्षेत्रों से संपर्क के कारण यहाँ अनेक धार्मिक और सांस्कृतिक परंपराओं का विकास हुआ। मथुरा में बौद्ध, जैन और ब्राह्मण परंपराओं से संबंधित मूर्तियों का निर्माण हुआ, जिससे इसकी धार्मिक विविधता स्पष्ट होती है।

मथुरा कला की विशेषता यह है कि इसमें स्थानीय भारतीय कलात्मक परंपरा का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। प्रारंभिक यक्ष-यक्षिणी परंपरा से विकसित सशक्त मानव आकृतियाँ आगे चलकर बुद्ध, बोधिसत्त्व, तीर्थंकर तथा विभिन्न देवी-देवताओं की प्रतिमाओं में दिखाई देती हैं। कुषाण काल में मथुरा कला ने विशेष उन्नति प्राप्त की और इसके बाद गुप्त काल में इसे अधिक संतुलित तथा आध्यात्मिक स्वरूप प्राप्त हुआ।

शोध के उद्देश्य

इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य मथुरा कला के ऐतिहासिक विकास तथा उसकी प्रमुख विशेषताओं का क्रमबद्ध अध्ययन करना है। इसके अंतर्गत मथुरा की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, प्रारंभिक मूर्तिकला परंपरा, मौर्य एवं शुंग कालीन प्रभाव, कुषाण कालीन विकास, बुद्ध की मानवाकार प्रतिमा, जैन तथा ब्राह्मण प्रतिमा परंपरा और गुप्तकालीन परिवर्तन का अध्ययन किया गया है।

इसके साथ ही मथुरा कला में प्रयुक्त लाल बलुआ पत्थर, मानव आकृतियों की सजीवता, वस्त्र-विन्यास, प्रभामंडल, मुद्राएँ, स्त्री सौंदर्य तथा धार्मिक विविधता जैसी प्रमुख कलात्मक विशेषताओं को समझने का प्रयास किया गया है।

शोध पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन ऐतिहासिक एवं वर्णनात्मक पद्धति पर आधारित है। इसके लिए प्राचीन भारतीय कला और संस्कृति से संबंधित पुस्तकों, ऐतिहासिक अध्ययनों तथा मथुरा कला से संबंधित उपलब्ध सामग्री का अध्ययन किया गया है। अध्ययन में मथुरा कला के विकास को कालक्रम के अनुसार प्रस्तुत किया गया है, ताकि उसके क्रमिक परिवर्तन को स्पष्ट रूप से समझा जा सके।

मथुरा की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

मथुरा का इतिहास अत्यंत प्राचीन है। इसकी प्राचीनता केवल ऐतिहासिक स्रोतों में ही नहीं, बल्कि धार्मिक एवं पौराणिक परंपराओं में भी दिखाई देती है। पौराणिक परंपरा के अनुसार मथुरा का संबंध मधु नामक यदुवंशी पुरुष से जोड़ा जाता है। उसके नाम से यह क्षेत्र मधुपुरी कहलाया। इसी प्रकार मधुवन नाम का भी उल्लेख मिलता है। मधु के बाद उसके पुत्र लवणासुर से संबंधित कथाएँ मिलती हैं। आगे चलकर शत्रुघ्न द्वारा लवणासुर के वध तथा मथुरा की पुनर्स्थापना की परंपरा भी मिलती है।

जैन परंपरा में भी मथुरा का उल्लेख मिलता है। इस प्रकार मथुरा का संबंध विभिन्न धार्मिक और सांस्कृतिक परंपराओं से रहा। आगे चलकर यह शूरसेन जनपद का प्रमुख केंद्र बनी। इसकी भौगोलिक स्थिति के कारण यहाँ व्यापार, धर्म और संस्कृति का विकास हुआ तथा यह विभिन्न क्षेत्रों के बीच संपर्क का महत्वपूर्ण केंद्र बनी।

मथुरा की यही बहुआयामी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि आगे चलकर उसकी कला के विकास का आधार बनी। यहाँ विकसित कला किसी एक धार्मिक परंपरा तक सीमित नहीं रही, बल्कि बौद्ध, जैन और ब्राह्मण परंपराओं को समान रूप से अभिव्यक्ति मिली।

मथुरा कला की तिथि एवं काल-विकास

मथुरा कला का विकास एक क्रमिक प्रक्रिया के रूप में हुआ। इसकी प्रारंभिक पृष्ठभूमि मौर्य एवं शुंग काल की स्थानीय कलात्मक परंपराओं में दिखाई देती है। मौर्य काल चौथी शताब्दी ईसा पूर्व, शुंग काल लगभग दूसरी-दृष्टहली शताब्दी ईसा पूर्व, कुषाण काल लगभग पहली-दृष्टहली शताब्दी ईस्वी तथा गुप्त काल लगभग चौथी-दृष्टहली शताब्दी ईस्वी माना जाता है।

मौर्य एवं शुंग काल में इसकी प्रारंभिक कलात्मक परंपराएँ विकसित हुईं। कुषाण काल में मथुरा कला का व्यापक विकास एवं उत्कर्ष हुआ, जबकि गुप्त काल में इसकी कला अधिक परिष्कृत, सौम्य, संतुलित और आध्यात्मिक रूप में विकसित हुई।

मथुरा कला के प्रमुख विषय

मथुरा कला के विषय बहुत व्यापक थे। इसमें बौद्ध धर्म से संबंधित बुद्ध और बोधिसत्त्व की प्रतिमाएँ, जैन धर्म से संबंधित तीर्थंकरों की प्रतिमाएँ तथा ब्राह्मण परंपरा के देवी-देवताओं का अंकन प्रमुख था। इसके अतिरिक्त यक्ष-यक्षिणी, स्त्री आकृतियाँ, धार्मिक कथाएँ, पशु-पक्षी, वनस्पति तथा सजावटी रूपांकनों का भी प्रयोग किया गया।

इस कला में धार्मिक विषयों के साथ तत्कालीन सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन की झलक भी दिखाई देती है। इस प्रकार मथुरा कला केवल धार्मिक मूर्तियों तक सीमित न रहकर तत्कालीन समाज, धार्मिक विविधता और सौंदर्य-बोध को भी व्यक्त करती है।

मथुरा कला का प्रारंभिक विकास

मथुरा में मूर्तिकला की परंपरा बहुत पुरानी थी। प्रारंभिक मथुरा कला में यक्ष एवं यक्षिणी की मूर्तियाँ विशेष रूप से महत्वपूर्ण थीं। इन मूर्तियों में विशाल शरीर, सशक्त गठन और प्रभावशाली व्यक्तित्व को प्रमुखता दी गई। यक्ष-यक्षिणी परंपरा केवल धार्मिक विश्वासों की अभिव्यक्ति नहीं थी, बल्कि इससे स्थानीय कलाकारों की तकनीकी क्षमता और स्वतंत्र कलात्मक दृष्टि का भी पता चलता है।

आगे चलकर यही सशक्त मानव आकृति की परंपरा मथुरा में बुद्ध और बोधिसत्त्व की प्रतिमाओं के निर्माण में दिखाई देती है। मथुरा की प्रारंभिक कला में मानव शरीर को सजीव, प्रभावशाली और शक्तिशाली रूप में प्रस्तुत करने की प्रवृत्ति आगे की मथुरा शैली की महत्वपूर्ण आधारभूमि बनी।

मौर्य एवं अशोक काल की पृष्ठभूमि

मौर्य काल भारतीय इतिहास में राजनीतिक एकीकरण और सांस्कृतिक विकास का महत्वपूर्ण काल था। सम्राट अशोक के समय बौद्ध धर्म के प्रसार के साथ बौद्ध कला और स्थापत्य को भी प्रोत्साहन मिला। मथुरा क्षेत्र भी इस व्यापक सांस्कृतिक वातावरण से प्रभावित हुआ।

इस काल की कला में धार्मिक प्रतीकों और स्थापत्य परंपराओं का विकास हुआ। मथुरा की स्थानीय कला परंपरा और व्यापक बौद्ध सांस्कृतिक वातावरण के संपर्क ने आगे के विकास के लिए आधार तैयार किया। इसी क्रम में शुंग काल में बौद्ध कला की प्रतीकात्मक परंपरा अधिक स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

शुंग काल में बौद्ध कला और बुद्ध का प्रतीकात्मक रूप

प्रारंभिक बौद्ध कला की एक महत्वपूर्ण विशेषता बुद्ध का प्रतीकात्मक रूप से प्रस्तुत किया जाना था। इस समय बुद्ध को सीधे मानव आकृति में दिखाने के स्थान पर बोधिवृक्ष, धर्मचक्र, स्तूप तथा चरण-चिह्न जैसे प्रतीकों द्वारा व्यक्त किया जाता था।

भरहुत और साँची जैसे केंद्रों में इस प्रकार की बौद्ध कला परंपरा दिखाई देती है।

यह प्रतीकात्मक परंपरा बौद्ध धार्मिक विचारों की कलात्मक अभिव्यक्ति थी। बाद में जब बुद्ध की मानवाकार प्रतिमाओं का विकास हुआ, तब मथुरा इस परिवर्तन का महत्वपूर्ण केंद्र बना। इस प्रकार मथुरा कला के विकास को समझने के लिए प्रतीकात्मक बौद्ध कला से मानवाकार बुद्ध प्रतिमा तक का परिवर्तन महत्वपूर्ण है।

कुषाण काल में मथुरा कला का उत्कर्ष

कुषाण काल मथुरा कला के विकास का सबसे महत्वपूर्ण चरण माना जाता है। इस काल में मथुरा एक प्रमुख मूर्तिकला केंद्र के रूप में विकसित हुआ। बड़ी संख्या में धार्मिक प्रतिमाओं का निर्माण हुआ और मथुरा शैली ने अपनी स्वतंत्र पहचान स्थापित की।

इस काल में बुद्ध की मानवाकार प्रतिमाओं का निर्माण व्यापक रूप से हुआ। इसके साथ ही जैन तीर्थंकरों तथा ब्राह्मण परंपरा के देवी-देवताओं की प्रतिमाएँ भी बनाई गईं। इससे स्पष्ट होता है कि मथुरा किसी एक धर्म की कला तक सीमित नहीं था।

कुषाण कालीन मथुरा प्रतिमाओं में शरीर की सशक्तता, चेहरे की भावाभिव्यक्ति और आकृति की जीवंतता दिखाई देती है। लाल चित्तीदार बलुआ पत्थर का व्यापक प्रयोग इस शैली की प्रमुख पहचान बना। मथुरा के कलाकारों ने भारतीय परंपराओं को आधार बनाकर धार्मिक प्रतिमाओं को विशिष्ट रूप प्रदान किया।

बुद्ध की मानवाकार प्रतिमा का विकास

मथुरा कला का एक महत्वपूर्ण योगदान बुद्ध की मानवाकार प्रतिमा के विकास से संबंधित है। प्रारंभिक बौद्ध कला में बुद्ध को प्रतीकों के माध्यम से व्यक्त किया जाता था, लेकिन कुषाण काल में बुद्ध की मानव आकृति में प्रतिमाएँ निर्मित होने लगीं।

मथुरा के बुद्ध रूपों में सशक्त शरीर, शांत चेहरा, प्रभामंडल तथा विशिष्ट मुद्राएँ दिखाई देती हैं। बुद्ध की प्रतिमाओं में अभय मुद्रा का प्रयोग भी मिलता है। वस्त्र शरीर से चिपके हुए या पतले रूप में दिखाए गए हैं, जिससे शरीर की आकृति स्पष्ट दिखाई देती है।

मथुरा की बुद्ध प्रतिमाओं में स्थानीय भारतीय कला परंपरा का प्रभाव दिखाई देता है। यक्ष प्रतिमाओं की सशक्त मानव आकृति की परंपरा और बुद्ध प्रतिमाओं के रूपांकन के बीच समानता भी उल्लेखनीय है। इस प्रकार मथुरा ने बौद्ध प्रतिमा कला को भारतीय स्वरूप प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

मथुरा कला में जैन परंपरा

मथुरा जैन कला का भी एक प्रमुख केंद्र रहा। यहाँ अनेक जैन तीर्थंकरों की प्रतिमाओं का निर्माण हुआ। जैन प्रतिमाओं में ध्यान, स्थिरता और आध्यात्मिकता को महत्व दिया गया। तीर्थंकरों की प्रतिमाएँ सामान्यतः शांत और गंभीर भाव को व्यक्त करती हैं।

मथुरा में जैन प्रतिमा परंपरा की उपस्थिति यह प्रमाणित करती है कि यहाँ धार्मिक सह-अस्तित्व और विविधता का वातावरण था। बौद्ध प्रतिमाओं के साथ जैन प्रतिमाओं का निर्माण मथुरा के व्यापक सांस्कृतिक स्वरूप को स्पष्ट करता है।

मथुरा कला में ब्राह्मण परंपरा

मथुरा कला में ब्राह्मण धार्मिक परंपरा से संबंधित देवी-देवताओं की प्रतिमाओं का भी निर्माण हुआ। विभिन्न देवताओं की मूर्तियों में स्थानीय कलात्मक परंपरा तथा धार्मिक प्रतीकों का समन्वय दिखाई देता है।

मथुरा की ब्राह्मण प्रतिमाएँ यह दर्शाती हैं कि कलाकारों ने अलग-अलग धार्मिक मान्यताओं के अनुरूप मूर्ति निर्माण की

तकनीक विकसित की। इस प्रकार मथुरा कला भारतीय धार्मिक विविधता को मूर्त रूप देने वाली कला परंपरा के रूप में सामने आती है।

गुप्त काल में मथुरा कला

गुप्त काल में मथुरा कला की पूर्ववर्ती परंपराओं का अधिक परिष्कृत रूप दिखाई देता है। इस समय मूर्तियों में शारीरिक शक्ति के साथ-साथ शांति, सौम्यता, संतुलन और आध्यात्मिकता पर अधिक बल दिया गया।

गुप्तकालीन मथुरा बुद्ध प्रतिमाओं में चेहरे के भाव अधिक शांत दिखाई देते हैं। वस्त्रों का चित्रण अधिक सूक्ष्म और प्रभामंडल अधिक सजावटी रूप लेने लगा। इस प्रकार कुषाण काल की सशक्त एवं मांसल शैली गुप्त काल में अधिक संतुलित एवं आध्यात्मिक रूप में विकसित हुई।

मथुरा कला की प्रमुख विशेषताएँ

1. स्वदेशी कलात्मक परंपरा

मथुरा कला की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता इसकी स्वदेशी भारतीय आधारभूमि है। इसमें स्थानीय धार्मिक विश्वासों, भारतीय प्रतीकों और पूर्ववर्ती यक्ष-यक्षिणी परंपरा का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है।

2. लाल चित्तीदार बलुआ पत्थर

मथुरा कला की पहचान लाल चित्तीदार बलुआ पत्थर से भी होती है। इस पत्थर का प्रयोग विभिन्न प्रकार की धार्मिक एवं अन्य प्रतिमाओं के निर्माण में किया गया। इससे मथुरा शैली को विशिष्ट भौतिक पहचान मिली।

3. सशक्त एवं सजीव मानव आकृतियाँ

मथुरा प्रतिमाओं में मानव शरीर को सशक्त और प्रभावशाली रूप में प्रस्तुत किया गया। आकृतियों में शारीरिक शक्ति, जीवन्तता और गति का अनुभव होता है।

4. भावाभिव्यक्ति

मथुरा कलाकारों ने केवल शारीरिक रूप को ही नहीं, बल्कि चेहरे के भावों को भी महत्व दिया। बुद्ध, तीर्थंकर और अन्य धार्मिक प्रतिमाओं में शांत, गंभीर तथा आध्यात्मिक भाव दिखाई देते हैं।

5. वस्त्र-विन्यास

मथुरा प्रतिमाओं में वस्त्र सामान्यतः पतले और शरीर से जुड़े हुए दिखाई देते हैं। इससे शरीर की संरचना स्पष्ट रहती है और प्रतिमा में प्राकृतिकता आती है।

6. प्रभामंडल

धार्मिक प्रतिमाओं में प्रभामंडल का विशेष महत्व है। आगे चलकर गुप्त काल में प्रभामंडल अधिक सजावटी और कलात्मक रूप में विकसित हुआ।

7. विभिन्न मुद्राएँ

मथुरा कला में धार्मिक प्रतिमाओं की विभिन्न मुद्राओं का प्रयोग मिलता है। बुद्ध की अभय मुद्रा विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। मुद्राओं के माध्यम से प्रतिमाओं के धार्मिक अर्थ और भाव को व्यक्त किया गया।

8. स्त्री सौंदर्य का चित्रण

मथुरा कला में स्त्री आकृतियों का भी सुंदर और सजीव चित्रण मिलता है। स्त्री आकृतियों में शारीरिक सौंदर्य, अलंकरण और स्वाभाविकता को महत्व दिया गया।

9. धार्मिक विविधता

मथुरा कला की सबसे महत्वपूर्ण विशेषताओं में धार्मिक विविधता है। एक ही कला केंद्र पर बौद्ध, जैन और ब्राह्मण परंपराओं से संबंधित प्रतिमाओं का निर्माण हुआ।

10. वनस्पति एवं पशु-पक्षी अंकन

मथुरा कला में धार्मिक दृश्यों के साथ वनस्पति, पशु-पक्षी और सजावटी तत्वों का भी प्रयोग हुआ। इससे कला में प्राकृतिक वातावरण और सौंदर्य का समावेश हुआ।

11. कथात्मक एवं सजावटी दृश्य

मथुरा कला में धार्मिक कथाओं तथा सजावटी दृश्यों को भी स्थान दिया गया। इनसे तत्कालीन कलाकारों की कल्पनाशक्ति और तकनीकी दक्षता का परिचय मिलता है।

12. राजकीय एवं लौकिक जीवन

मथुरा कला केवल धार्मिक जीवन तक सीमित नहीं थी। इसमें राजकीय तथा लौकिक जीवन से जुड़े तत्व भी दिखाई देते हैं। इस कारण यह तत्कालीन सामाजिक जीवन के अध्ययन के लिए भी महत्वपूर्ण है।

13. भारतीय परंपराओं का समन्वय

मथुरा कला में स्थानीय परंपराओं के साथ विभिन्न धार्मिक और सांस्कृतिक प्रभावों का समन्वय हुआ। इसके बावजूद इसकी मूल पहचान भारतीय कलात्मक परंपरा पर आधारित रही।

14. जीवन्तता एवं गतिशीलता

मथुरा की मूर्तियों में आकृतियों की सजीवता और प्रभावशाली प्रस्तुति विशेष रूप से उल्लेखनीय है। शरीर की बनावट, चेहरे के भाव तथा मुद्राओं के माध्यम से प्रतिमाओं में जीवन्तता उत्पन्न की गई।

मथुरा कला में सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन

मथुरा कला केवल धार्मिक प्रतिमाओं का संग्रह नहीं है, बल्कि यह तत्कालीन सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन को समझने का भी महत्वपूर्ण माध्यम है। मूर्तियों और सजावटी दृश्यों में तत्कालीन वस्त्र, आभूषण, शारीरिक अलंकरण तथा सामाजिक जीवन से जुड़े अनेक तत्व दिखाई देते हैं।

मथुरा कला की धार्मिक विविधता भी सामाजिक जीवन का महत्वपूर्ण पक्ष प्रस्तुत करती है। एक ही कलात्मक केंद्र पर बौद्ध, जैन और ब्राह्मण परंपराओं से संबंधित प्रतिमाओं का निर्माण होना मथुरा के बहुधार्मिक वातावरण को दर्शाता है। इस प्रकार मथुरा कला तत्कालीन समाज की विविधता, धार्मिक सह-अस्तित्व और सांस्कृतिक जीवन की झलक प्रस्तुत करती है।

भारतीय कला एवं संस्कृति में मथुरा कला का योगदान

मथुरा कला का भारतीय कला एवं संस्कृति में महत्वपूर्ण योगदान रहा। इसने भारतीय मूर्तिकला को सशक्त मानव आकृति, भावाभिव्यक्ति और धार्मिक प्रतीकों की प्रभावशाली अभिव्यक्ति प्रदान की। बुद्ध की मानवाकार प्रतिमाओं के विकास में मथुरा की भूमिका विशेष रूप से महत्वपूर्ण रही।

मथुरा में बौद्ध, जैन और ब्राह्मण परंपराओं की प्रतिमाओं का निर्माण भारतीय धार्मिक विविधता को कलात्मक रूप में प्रस्तुत करता है। मथुरा शैली ने आगे की भारतीय मूर्तिकला को प्रभावित किया और गुप्त काल में इसकी परंपराओं को अधिक आध्यात्मिक तथा संतुलित रूप प्राप्त हुआ।

इस प्रकार मथुरा कला केवल एक क्षेत्रीय कला शैली नहीं रही, बल्कि भारतीय मूर्तिकला की व्यापक परंपरा का महत्वपूर्ण हिस्सा

बनी। इसकी स्वदेशी आधारभूमि, लाल बलुआ पत्थर, सजीव मानव आकृतियाँ, भावाभिव्यक्ति और धार्मिक विविधता इसकी स्थायी विशेषताएँ हैं।

निष्कर्ष

उपर्युक्त अध्ययन से स्पष्ट होता है कि मथुरा कला प्राचीन भारतीय कला एवं संस्कृति की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि थी। इसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि अत्यंत प्राचीन थी और पौराणिक परंपराओं में इसे मधु, मधुपुरी तथा मधुवन से जोड़ा गया है। आगे चलकर मथुरा शूरसेन जनपद का महत्वपूर्ण केंद्र बनी और विभिन्न धार्मिक एवं सांस्कृतिक परंपराओं का संगम स्थल रही।

मौर्य एवं अशोक काल में विकसित बौद्ध सांस्कृतिक वातावरण तथा शुंग काल की प्रतीकात्मक बौद्ध कला ने आगे के विकास के लिए आधार तैयार किया। इस समय बुद्ध को बोधिवृक्ष, धर्मचक्र, स्तूप तथा चरण-चिह्न जैसे प्रतीकों के माध्यम से व्यक्त किया जाता था। इसके बाद कुषाण काल में मथुरा कला का व्यापक विकास हुआ और बुद्ध की मानवाकार प्रतिमाओं के साथ जैन तीर्थंकरों तथा ब्राह्मण परंपरा की प्रतिमाओं का भी निर्माण हुआ।

मथुरा कला की प्रमुख विशेषताओं में लाल चित्तीदार बलुआ पत्थर, सशक्त मानव आकृतियाँ, यक्ष परंपरा का प्रभाव, भावाभिव्यक्ति, पतले वस्त्र, प्रभामंडल, विभिन्न मुद्राएँ, स्त्री सौंदर्य तथा धार्मिक विविधता प्रमुख हैं। गुप्त काल में इन परंपराओं को अधिक सौम्य, संतुलित और आध्यात्मिक रूप प्राप्त हुआ।

अतः कहा जा सकता है कि मथुरा कला भारतीय मूर्तिकला के विकास की एक महत्वपूर्ण कड़ी थी। इसने भारतीय धार्मिक एवं सांस्कृतिक जीवन को मूर्त रूप देने के साथ-साथ भारतीय कला को एक विशिष्ट पहचान प्रदान की। मथुरा कला की परंपरा भारतीय कला के इतिहास में आज भी महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

संदर्भ-ग्रंथ सूची

1. कुमार, मुनेश. (2023). प्राचीन भारतीय कला एवं संस्कृति. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, पृ. 185।
2. नाहर, रतिभानु सिंह. (2018). प्राचीन भारत का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास. किताब महल पब्लिशर्स, पृ. 344-345।
3. पाण्डेय, वी. के. (2008). प्राचीन भारत का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास. सारदा पुस्तक भवन, पृ. 252।
4. प्रताप, रीता. (2022). भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास. राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, पृ. 567।
5. शर्मा, राम शरण. (2005). भारत का प्राचीन अतीत. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, पृ. 186।
6. Sharma] R- S- (2005). India's Ancient Past- OÜford University Press-
7. Thapar] R. (2012). Aśoka and the Decline of the Mauryas ¼3rd ed-½- OÜford University Press-